(४) देश के व्यापारिक सम्बन्धों पर मुद्राओं द्वारा प्रकाश पड़ता है दक्षिण भारत में रोम-साम्राज्य की बहुत सी सुवर्ण मुद्रायें मिली हैं जिनसे इस का असन्दिग्ध प्रमाण मिलता है कि रोम और भारत के बीच व्यापारिक सम्बन्ध और इस सम्बन्ध में अधिकतर लाभ भारत को ही था।

(५) मुद्राओं द्वारा शासकों की राज्य-सीमा निर्धारित करने में सहाय मिलती है।

मुद्रा-साक्ष्य का विवेकपूर्ण अध्ययन करके विद्वानों ने भारतीय इतिहास विषय में बहुत सी जानकारी हासिल की है लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि इस द्वारा हमें महात्मा बुद्ध के समय से लेकर गुप्त-काल तक के ही इतिहास की जानका मिलती है। गुप्त-काल का इतिहास जानने में मुद्राओं का विशेष महत्व है। गुप्त-क के बाद की मुद्राओं से कोई महत्वपूर्ण सहायता नहीं मिलती।

(४) विदेशी विवरण

अति प्राचीन काल से भारत ने विदेशी पर्यटकों को आकृष्ट किया है जिन्होंने भारतवासियों के जीवन का अध्ययन किया और अपने निरीक्षण के आध पर जो विवरण प्रस्तुत किया वह बड़ा उपयोगी साबित हुआ। भारत में आने वा विदेशी यात्री मुख्य रूप से तीन जातियों के थे—(१) यूनानी, (२) चीनी औ (३) अरबी।

यूनानी

यूनानी लेखकों के लेखों ने भारतीय इतिहास-निर्माण में बड़ी महत्वपू सहायता दी है। यूनानी लेखकों के ये नाम महत्वपूर्ण हैं—(१) हेरोडोटस (२) स्ट्रैब (३) प्लिनी (४) एरियन (५) मेगस्थनीज (६) प्लिनी दि एल्डर (७) प्लूटा (८) जस्टिन। सिकन्दर के साथ बहुत से यूनानी लेखक आए थे जिनके लेखों द्वा तत्कालीन भारत के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। चन्द्रगुप्त मौर्य के बा में इनसे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। मेगस्थनीज के विवरण से चन्द्र गुप्त मो की शासन व्यवस्था के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

चीनी

यूनानी लेखकों की भाँति चीनी लेखकों के लेख भी भारतवर्ष के इतिहास प प्रचुर प्रकाश डालते हैं। अनेक चीनी यात्री समय-समय पर भारतीय संस्कृति एव धर्म का अध्ययन करने के लिये भारतवर्ष आए थे। उनमें से (१) सुमाचीन (२ फाह्यान, (३) ह्वेन-साँग और (४) इत्सिंग, प्रमुख हैं। इन्होंने तत्कालीन भार का विवरण लिखा जिससे हमें अत्यन्त उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है।

अरबी

आठवीं शताब्दी के बाद के भारतीय जीवन की जानकारी हासिल करने के लिये अरब यात्रियों का विवरण अत्यन्त उपयोगी है। मुस्लिम पर्यटकों में सबसे महत्वपूर्ण नाम अलबरूनी का है जो संस्कृत का विद्वान था और जिसने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ तारीखे-हिन्द में हिन्दुओं के जीवन का सहानुभूतिमय तथा आलोचनात्मक विवरण दिया था। सुलेमान का विवरण भी हमारे लिये कम महत्वपूर्ण नहीं है।

विदेशी विवरण की विवेचना

२
४
ा है जिनके सम्बन्ध में अन्य साक्ष्य मौन हैं। उदाहरणार्थ सिकन्दर के भारत-
आक्रमण के बारे में भारतीय साहित्य में कोई उल्लेख नहीं मिलता और जिसकी
जना केवल यूनानी लेखकों द्वारा ही प्राप्त होती है।

ब (२) विदेशी यात्रियों के विवरण घटनाओं के सम्बन्ध उतने विस्तृत नहीं
जितने जनजीवन के बारे में। उदाहरण के लिए चीनी पर्यटक ह्वेनसांग ने लगभग
पूर्ण देश की यात्रा की थी और यहाँ के निवासियों के रहन-सहन के बारे में रोचक
रण दिया था। अपने समय के शासकों के बारे में भी उसने महत्वपूर्ण बातें
ही थीं।

इ (३) विदेशी विवरण की एक कमी का उल्लेख करना भी आवश्यक है।
धकांश विदेशी पर्यटक भारत की बोलियों और भाषाओं से अपरिचित थे इस-
ये बहुत सी बातों को बिना समझे ही उन्होंने लिख दिया था। उदाहरण के लिये
स्थनीज ने भारत की जाति-प्रथा के वास्तविक स्वरूप को समझने में गलती
थी।

((४) विदेशी लेखकों द्वारा तिथि क्रम के निश्चिय में बड़ी महत्वपूर्ण सहायता
प्त होती है। "भारतीय इतिहास में तिथि-क्रम का असंदिग्ध रूप से प्रारम्भ चन्द्र-
न मौर्य के समय से होता है और चन्द्रगुप्त मौर्य की तिथि का ज्ञान हमें एक यूनानी
खक द्वारा प्राप्त होता है जिसने उसे सेन्द्रोकोट्टस कहा है।"

(५) पुरातत्व सम्बन्धी साक्ष्य

भारत में प्राचीन काल के अगणित स्मारक अभी विद्यमान हैं जिनसे भारत
अतीत पर प्रकाश पड़ता रहता है। स्मारकों के अन्तर्गत इमारतें, मन्दिर-मस्जिद,
लाकृतियाँ, स्तूप, विहार और उत्खनन द्वारा प्राप्त अन्य सामग्री को लेना चाहिए।
ारत का सांस्कृतिक इतिहास तब तक अच्छी तरह से नहीं समझा जा सकता है जब
क कि उसके प्राचीन स्मारकों का अध्ययन न किया जाय।

ाचीन स्मारकों का विवेचन

(१) हरप्पा और मोहनजोदरों में उत्खनन द्वारा जो वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं
न्हीं से भारत की प्राचीनतम सभ्यता अर्थात् सिन्धु सभ्यता के बारे में ज्ञान प्राप्त
आ। इसी प्रकार देश के विभिन्न स्थानों—कौशाम्बी, सारनाथ, नागर्जुनी कोण्डा
ादि में जो खुदाई हो रही है उससे प्राचीन इतिहास के अनेक पक्षों पर प्रचुर प्रकाश
ड़ता है।

(२) भारत की कलात्मक उन्नति का एकमात्र विवरण स्मारकों द्वारा ही
ाप्त हुआ। कानपुर जिले के भीतर गाँव का ईंटों का मन्दिर, अजन्ता का चित्र कला,
वगढ़ (झाँसी जिला) का दशावतार मन्दिर और नालन्दा तथा सारनाथ की बुद्धि-
तिमाओं से यह पता लगता है कि गुप्त-काल में कला की सभी शाखाओं का चरम
विकास हुआ था।

(३) प्राचीन स्मारकों के अध्ययन द्वारा ही हमें विदेशों में भारतीय प्रसार
ा विवरण मिलता है। जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया तथा सुदूरपूर्व के अन्य स्थानों में
ो स्मारक मिलते हैं उन्हें देखकर यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि इन प्रदेशों
में भारतीय संस्कृति का प्रसार था।

निष्कर्ष

प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के लिये साधनों का अभाव नहीं है वरन्

तिथि-क्रम की कठिनाई है। वैसे दूसरे साधन बराबर विद्यमान रहे हैं। जिनके आध
पर अनेक पश्चिम और भारतीय विद्वानों ने अत्यन्त धैर्य और परिश्रम के साथ निरन्त
कार्य करते हुये भारतीय इतिहास के विभिन्न पक्षों पर ग्रन्थ लिखे हैं। नित्य अने
पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, जिनमें ऐतिहासिक प्रश्नों पर विचार किया जाता
किन्तु यह ध्यान रहे कि इस प्रकार के पुनर्विचार का आधार हमारी जानकारी के
पाँच साधन प्रस्तुत करते हैं। इन साधनों का प्रयोग करने में किन-किन गुणों व
आवश्यकता पड़ती है, इसका उल्लेख करते हुये डा० रमाशंकर त्रिपाठी ने लिख
है, 'इतिहासकार को खान खोदने वाले की भाँति स्वर्ण रूपी तथ्य प्राप्त करने के लि
तर्कपूर्ण विचार तथा धैर्य रूपी कुल्हाड़े से कार्य करना चाहिये। तभी वे भारत
क्रमबद्ध तथा अविरोध इतिहास के निर्माण में सफल हो सकते हैं।"